॥ वैराग्य संदीपनी गोस्वामितुलसीदासकृत हिंदी ॥

.. Vairagya Sandipani by Gosvami Tulasidas ..

sanskritdocuments.org

September 11, 2017

.. Vairagya Sandipani by Gosvami Tulasidas ..

॥ वैराग्य संदीपनी गोस्वामितुलसीदासकृत हिंदी ॥

Sanskrit Document Information

Text title : vairAgyasandIpanI

File name : vairAgyasandIpanIHindiTulasidas.itx

Location : doc_z_otherlang_hindi

Author : Tulasidas

Transliterated by : Ankur Nagpal ankurnagpal108 at gmail dot com

Proofread by : Ankur Nagpal ankurnagpal108 at gmail dot com

Description-comments : vairAgyasandIpanI

Latest update : January 28, 2017

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

September 11, 2017

sanskritdocuments.org

॥ अथ श्रीगोस्वामितुलसीदासकृत वैराग्यसंदीपनी ॥

दोहा -

राम बाम दिसि जानकी लखन दाहिनी ओर ।
ध्यान सकल कल्यानमय सुरतरु तुलसि तोर ॥ १॥

तुलसी मिटै न मोह तम किएँ कोटि गुन ग्राम ।
हृदय कमल फूलै नहीं बिनु रबि-कुल-रबि राम ॥ २॥

सुनत लखत श्रुति नयन बिनु रसना बिनु रस लेत ।
बास नासिका बिनु लहै परसै बिना निकेत ॥ ३॥

सोरठा -

अज अद्वैत अनाम अलख रूप-गुन-रहित जो ।
माया पति सोई राम दास हेतु नर-तनु-धरेउ ॥ ४॥

दोहा -

तुलसी यह तनु खेत है मन बच कर्म किसान ।
पाप-पुन्य द्वै बीज हैं बवै सो लवै निदान ॥ ५॥

तुलसी यह तनु तवा है तपत सदा त्रैताप ।
सांति होई जब सांतिपद पावै राम प्रताप ॥ ६॥

तुलसी बेद-पुरान-मत पूरन सास्त्र बिचार ।
यह बिराग-संदीपनी अखिल ग्यान को सार ॥ ७॥

दोहा -

सरल बरन भाषा सरल सरल अर्थमय मानि ।
तुलसी सरलै संतजन ताहि परी पहिचानि ॥ ८॥

चौपाई -

अति सीतल अति ही सुखदाई ।
सम दम राम भजन अधिकाई ॥

जड जीवन कौं करै सचेता ।
जग महँ बिचरत है एहि हेता ॥ ९॥

दोहा -

तुलसी ऐसे कहुँ कहूँ धन्य धरनि वह संत ।
परकाजे परमारथी प्रीति लिये निबहंत ॥ १०॥

की मुख पट दीन्हे रहैं जथा अर्थ भाषंत ।
तुलसी या संसारमें सो बिचारजुत संत ॥ ११॥

बोलै बचन बिचारि कै लीन्हें संत सुभाव ।
तुलसी दुख दुर्बचन के पंथ देत नहिं पाँव ॥ १२॥

सत्रु न काहू करि गनै मित्र गनै नहिं काहि ।
तुलसी यह मत संत को बोलै समता माहि ॥ १३॥

चौपाई -
अति अनन्यगति इंद्री जीता ।
जाको हरि बिनु कतहुँ न चीता ॥

मृग तृष्णा सम जग जिय जानी ।
तुलसी ताहि संत पहिचानी ॥ १४॥

दोहा -
एक भरोसो एक बल एक आस बिस्वास ।
रामरूप स्वाती जलद चातक तुलसीदास ॥ १५॥

सो जन जगत जहाज है जाके राग न दोष ।
तुलसी तृष्णा त्यागि कै गहै सील संतोष ॥ १६॥

सील गहनि सब की सहनि कहनि हीय मुख राम ।
तुलसी रहिए एहि रहनि संत जनन को काम ॥ १७॥

निज संगी निज सम करत दुरजन मन दुख दून ।
मलयाचल है संतजन तुलसी दोष बिहून ॥ १८॥

कोमल बानी संत की स्रवत अमृतमय आइ ।
तुलसी ताहि कठोर मन सुनत मैन होइ जाइ ॥ १९॥

अनुभव सुख उतपति करत भय-भ्रम धरै उठाइ ।
ऐसी बानी संत की जो उर भेदै आइ ॥ २०॥

सीतल बानी संत की ससिहू ते अनुमान ।

तुलसी कोटि तपन हरै जो कोउ धारै कान ॥ २१॥

चौपाई -
पाप ताप सब सूल नसावै ।
मोह अंध रबि बचन बहावै ॥

तुलसी ऐसे सदगुन साधू ।
बेद मध्य गुन बिदित अगाधू ॥ २२॥

दोहा -
तन करि मन करि बचन करि काहू दूखत नाहिं ।
तुलसी ऐसे संतजन रामरूप जग माहिं ॥ २३॥

मुख दीखत पातक हरै परसत कर्म बिलाहिं ।
बचन सुनत मन मोहगत पूरुब भाग मिलाहिं ॥ २४॥

अति कोमल अरु बिमल रुचि मानस में मल नाहिं ।
तुलसी रत मन होइ रहै अपने साहिब माहिं ॥ २५॥

जाके मन ते उठि गई तिल-तिल तृष्णा चाहि ।
मनसा बाचा कर्मना तुलसी बंदत ताहि ॥ २६॥

कंचन काँचहि सम गनै कामिनि काष्ठ पषान ।
तुलसी ऐसे संतजन पृथ्वी ब्रह्म समान ॥ २७॥

चौपाई -
कंचन को मृतिका करि मानत ।
कामिनि काष्ठ सिला पहिचानत ॥

तुलसी भूलि गयो रस एह ।
ते जन प्रगट राम की देहा ॥ २८॥

दोहा -
आकिंचन इंद्रीदमन रमन राम इक तार ।
तुलसी ऐसे संत जन बिरले या संसार ।२९ ॥

अहंबाद मैं तैं नहीं दुष्ट संग नहिं कोइ ।
दुख ते दुख नहिं ऊपजै सुख तैं सुख नहिं होइ ॥ ३०॥

सम कंचन काँचै गिनत सत्रु मित्र सम दोइ ।
तुलसी या संसारमें कात संत जन सोई ॥ ३१॥

बिरले बिरले पाइए माया त्यागी संत ।
तुलसी कामी कुटिल कलि केकी केक अनंत ॥ ३२॥

मैं तं मेट्यो मोह तम उग्यो आतमा भानु ।
संत राज सो जानिये तुलसी या सहिदानु ॥ ३३॥

सोरठा -
को बरनै मुख एक तुलसी महिमा संत की ।
जिन्ह के बिमल बिबेक सेस महेस न कहि सकत ॥ ३४॥

दोहा -
महि पत्री करि सिंधु मसि तरु लेखनी बनाइ ।
तुलसी गनपत सों तदपि महिमा लिखी न जाइ ॥ ३५॥

धन्य धन्य माता पिता धन्य पुत्र बर सोइ ।
तुलसी जो रामहि भजे जैसेहुँ कैसेहुँ होइ ॥ ३६॥

तुलसी जाके बदन ते धोखेहुँ निकसत राम ।
ताके पग की पगतरी मेरे तन को चाम ॥ ३७॥

तुलसी भगत सुपच भलौ भजै रैन दिन राम ।
ऊँचो कुल केहि कामको जहाँ न हरिको नाम ॥ ३८॥

अति ऊँचे भूधरनि पर भुजगन के अस्थान ।
तुलसी अति नीचे सुखद ऊख अन्न अरु पान ॥ ३९॥

चौपाई -
अति अनन्य जो हरि को दासा ।
रटै नाम निसिदिन प्रति स्वासा ॥

तुलसी तेहि समान नहिं कोई ।
हम नीकें देखा सब कोई ॥ ४०॥

चौपाई -
जदपि साधु सबही बिधि हीना ।

तद्यपि समता के न कुलीना ॥

यह दिन रैन नाम उच्चरै ।
वह नित मान अगिनि महँ जरै ॥ ४१॥

दोहा -
दास रता एक नाम सों उभय लोक सुख त्यागि ।
तुलसी न्यारो ह्वै रहै दहै न दुख की आगि ॥ ४२॥

रैनि को भूषन इंदु है दिवस को भूषन भानु ।
दास को भूषन भक्ति है भक्ति को भूषन ग्यानु ॥ ४३॥

ग्यान को भूषन ध्यान है ध्यान को भूषन त्याग ।
त्याग को भूषन शांतिपद तुलसी अमल अदाग ॥ ४४॥

चौपाई -
अमल अदाग शांतिपद सारा ।
सकल कलेस न करत प्रहारा ॥

तुलसी उर धारै जो कोई ।
रहै अनंद सिंधु महँ सोई ॥ ४५॥

बिबिध पाप संभव जो तापा ।
मिटहिं दोष दुख दुसह कलापा ॥

परम सांति सुख रहै समाई ।
तहँ उतपात न बेधै आई ॥ ४६॥

तुलसी ऐसे सीतल संता ।
सदा रहै एहि भाँति एकंता ॥

कहा करै खल लोग भुजंगा ।
कीन्ह्यौ गरल-सील जो अंगा ॥ ४७॥

दोहा -
अति सीतल अतिही अमल सकल कामना हीन ।
तुलसी ताहि अतीत गनि बृत्ति सांति लयलीन ॥ ४८॥

चौपाई -

जो कोइ कोप भरे मुख बैना ।
सन्मुख हतै गिरा-सर पैना ॥

तुलसी तऊ लेस रिस नाहिं ।
सो सीतल कहिए जग माहीं ॥ ४९॥

दोहा -
सात दीप नव खंड लौ तीनि लोक जग माहिं ।
तुलसी सांति समान सुख अपर दूसरो नाहीं ॥ ५०॥

चौपाई -
जहाँ सांति सतगुरु की दई ।
तहाँ क्रोध की जर जरि गई ॥

सकल काम बासना बिलानी ।
तुलसी बहै सांति सहिदानी ॥ ५१॥

तुलसी सुखद सांति को सागर ।
संतन गायो करन उजागर ॥

तामें तन मन रहै समोई ।
अहं अगिनि नहिं दाहैं कोई ॥ ५२॥

दोहा -
अहंकार की अगिनि में दहत सकल संसार ।
तुलसी बाँचै संतजन केवल सांति अधार ॥ ५३॥

महा सांति जल परसि कै सांत भए जन जोइ ।
अहं अगिनि ते नहिं दहैं कोटि करै जो कोइ ॥ ५४॥

तेज होत तन तरनि को अचरज मानत लोइ ।
तुलसी जो पानी भया बहुरि न पावक होइ ॥ ५५॥

जद्यपी सीतल सम सुखद जगमें जीवन प्रान ।
तदपि सांति जल जनि गनौ पावक तेल प्रमान ॥ ५६॥

चौपाई -
जरै बरै अरु खीझि खिझावै ।

राग द्वेष महँ जनम गँवावै ॥

सपनेहुँ सांति नहि उन देही ।
तुलसी जहाँ-जहाँ ब्रत एही ॥ ५७॥

दोहा -
सोइ पंडित सोइ पारखी सोई संत सुजान ।
सोई सूर सचेत सो सोई सुभट प्रमान ॥ ५८॥

सोइ ग्यानी सोइ गुनी जन सोई दाता ध्यानि ।
तुलसी जाके चित भई राग द्वेष की हानि ॥ ५९॥

चौपाई -
राग द्वेष की अगिनि बुझानी ।
काम क्रोध बासना नसानी ॥

तुलसी जबहि सांति गृह आई ।
तब उरहीं उर फिरी दोहाई ॥ ६०॥

दोहा -
फिरी दोहाई राम की गे कामादिक भाजि ।
तुलसी ज्यों रबि कें उदय तुरत जात तम लाजि ॥ ६१॥

यह बिराग संदीपनी सुजन सुचित सुनि लेहु ।
अनुचित बचन बिचारि के जस सुधारि तस देहु ॥ ६२॥

॥ इति श्रीमद्गोस्वामीतुलसीदासकृत वैराग्यसंदीपनी संपूर्णम् ॥

Encoded and proofread by Ankur Nagpal ankurnagpal108 at gmail dotcom

Searchable pdf was typeset using generateactualtext feature of XeLaTeX 0.99996
on September 11, 2017

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*